बाइबल की भविष्यवाणियां

बाइबल के अर्थ में भविष्यवाणी परमेश्वर की ओर से एक संदेश है, उसका सम्बन्ध अतीत से, वर्तमान से या भविष्य से हो सकता है। मनुष्य का दिमाग अतीत और वर्तमान की समीक्षा तो कर सकता है, परन्तु भविष्य की पूर्वसूचना देने में अयोग्य है, इसलिए होने वाली बातों की सही-सही पूर्वसूचनाएं अलौकिक ही होंगी। इसलिए बाइबल की भविष्यवाणियां ईश्वरीय प्रदर्शन हैं। ज्ञान का आश्चर्यकर्म भी शक्ति के आश्चर्यकर्म की तरह ही अलौकिक है। यदि बाइबल ने भविष्य की उन घटनाओं की सचमुच पूर्वसूचना दे दी है जिन्हें मानवीय ज्ञान से किसी भी प्रकार से जाना नहीं जा सकता, तो वह भविष्यसूचकता इस बात का प्रमाण है कि बाइबल का लेखक कोई मनुष्य नहीं, बल्कि परमेश्वर है।

बाइबल में भविष्यवाणियों की विस्तृत किस्में मिलती हैं। यीशु सहित विशेष नगरों, देशों तथा लोगों; परमेश्वर के राज्य; और व्यक्तियों के बारे में बहुत सी भविष्यवाणियां की गई हैं। (यीशु के बारे में पिछले पाठ में कई भविष्यवाणियों का उल्लेख किया गया था। इस पाठ में उनका अध्ययन विस्तार से किया जाएगा।)

नगरों के बारे में भविष्यवाणियां

यरीहो

यहोशू की अगुआई में यरीहो के विनाश के बाद, एक असामान्य भविष्यवाणी की गई थी कि नगर के पुनर्निर्माण के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति को अपने सबसे बड़े और सबसे छोटे दो पुत्रों को खोना पड़ेगा (यहोशू 6:26)। यह भविष्यवाणी विशेष रूप से लगभग पांच सौ वर्ष बाद हीएल में पूरी हुई थी। यरीहो के पुनर्निर्माण के समय, इस बेतेलवासी का ज्येष्ठ पुत्र अबीराम और सबसे छोटा पुत्र सगूब मर गए थे (1 राजा 16:34)।

सूर

''फीनीके के सबसे प्रसिद्ध नगर और संसार के प्राचीन व्यापारिक केन्द्र'' सूर के विषय में परमेश्वर के कम से कम पांच नबियों को ईश्वरीय संदेश मिला था। उस पर बहुत सी जातियों ने आक्रमण करना था (यहेजकेल 26:3)। यह बात बेबिलोनियों, यूनानियों, रोमियों और तुर्कों के आक्रमणों से पूरी हो गई थी। सूर को सत्तर वर्षों तक बिसरा दिया जाना था (यशायाह 23:15)। यह भविष्यवाणी बेबिलोन के आक्रमण के अन्त और सूर के पहले पतन से 125 वर्ष पहले की गई थी। एक और चौंकाने वाली भविष्यवाणी के अनुसार, शताब्दी के लगभग तीन चौथाई समय तक भूले रहने के बाद, सूर ने समुद्र के बीच सामर्थी बनना था (यहेजकेल 26:17)। सत्तर वर्षों तक उजाड़ में रहने के बाद, लौटकर लोग पुराने स्थान पर बनाने के बजाय सागर से आधा मील दूर एक टापू पर चले गए थे।

यहेजकेल ने भविष्यवाणी की थी कि सूर के पत्थर, लकड़ी और यहां तक कि धूलि भी समुद्र में फेंक दी जाएगी, जिससे उसकी चट्टानें नंगी हो जाएंगी (यहेजकेल 26:12-14)। यह भविष्यवाणी आश्चर्यजनक ढंग से पूरी हुई जब सिकन्दर महान ने पुराने नगर से नये द्वीप नगर तक उच्च मार्ग बनाने के लिए सब सामान लगा दिया। भविष्यवक्ता ने यह भी पूर्वसूचना दी थी कि पुराना नगर जाल फैलाने का स्थान बन जाएगा (यहेजकेल 26:5, 14)। यात्रियों को पुराने नगर के स्थान की चट्टानों पर मछुआरों के अकड़े हुए जाल मिले हैं। नये नगर के लिए, नबी ने भविष्यवाणी की थी कि, वह जल जाएगा (आमोस 1:10; जकर्याह 9:3, 4)। सिकन्दर महान ने क्रोधित होकर कि सूर ने इतनी देर तक उसकी घेराबन्दी का सामना किया, और अन्ततः उसने नगर का सर्वनाश करके इसे आग लगा दी।

बाद के समयों में सूर के लोगों ने मूर्तिपूजा से फिरकर सच्चे परमेश्वर को स्वीकार कर लिया। यीशु ने फीनीके की एक महिला की उसके विश्वास के कारण प्रशन्सा की (मत्ती 15:21-28) और पौलुस को यरूशलेम की अपनी अन्तिम यात्रा के समय वहां प्रभु की कलीसिया मिली थी (प्रेरितों 21:3-5)। डियोक्लेशियन के सताव के समय सूर ने ''बहुत से शहीद और विश्वास का अंगीकार करने वाले तैयार किए थे।''

बाबुल

अश्शूर कई वर्षों तक (लगभग 854-612 ई.पू.) संसार की एक बहुत बड़ी शक्ति थी जिसकी राजधानी नीनवे थी। फलस्तीन के दो नबियों ने कसदिया[1] या बाबुल के पतन की बात की (लगभग 605-538 ई.पू.) जिसकी राजधानी बाबुल थी। मनुष्य की अन्तर्दृष्टि अश्शूर के पतन को समय से पहले नहीं देख सकी थी, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त नबी यशायाह ने बड़ी दृढ़ता से न केवल इसके उदय का बल्कि एक और विश्व शक्ति, कसदिया के गिरने का भी ऐलान कर दिया था (यशायाह 13:19; 21:9)। उस साम्राज्य के गिरने की भविष्यवाणी इसके गिरने से लगभग दो शताब्दियां पूर्व की गई थी। फिर, कसदिया के उदय के बाद, परमेश्वर ने उस घटना के 56 वर्ष पहले उस जाति के विनाश का संदेश देकर एक और भविष्यवक्ता को भेजा (यिर्मयाह 25:12; 27:8; 50:10; 51:24; हबक्कूक 2 भी देखिए)।

यदि कोई राजधानी नगर अजेय लगता था, तो वह बाबुल ही था। पीतल के फाटकों वाली इसकी ऊंची, मोटी दीवारें आक्रमणकारियों को खदेड़ देती थीं, परन्तु यहूदिया में रहने वाले परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं ने यह घोषणा करने का साहस किया कि यह बड़ा नगर गिर जाएगा।

बाबुल के गिरने की बातों की विस्तृत रूप से घोषणा की गई थी। मादियों और एलामियों (फारसियों) के आक्रमण सफल होने थे और उनके नाम तक बता दिए गए थे (दानिय्येल 5:28)। उनके राजा, कुस्त्रु का भी नाम लेकर उसकी भविष्यवाणी की गई थी (यशायाह 44:28)। अलग-अलग जातियां जिन पर उसने विजय पानी थी, उसकी आक्रमणकारी सेना में होनी थीं (यिर्मयाह 50:27-32)। नदी सूख जाएगी (यशायाह 44:27; यिर्मयाह 51:36)। यह भविष्यवाणी 538 ई. पू. में पूरी हुई थी जब कुस्त्रु ने फरात नदी का बहाव बदलकर अपना मार्ग उस सूखी नदी से बनाया था। बाबुल में सूखी नदी और मतवालेपन की भविष्यवाणियां की गई थीं (यिर्मयाह 51:39, 58)। कुछ फाटक खुले रखे जाने थे (यशायाह 45:1)। ये भविष्यवाणियां उस समय पूरी हुईं जब एक समारोह के दौरान नदी के दोनों ओर नगर के भीतरी फाटक लापरवाही से खुले रहे, और कुस्त्रु के सिपाहियों ने शराबी हुए पहरेदारों को आश्चर्यचकित कर दिया। नबी ने कहा था, बहुत सा धन ले लिया जाएगा (यशायाह 45:3) और ऐसा ही हुआ।

पूर्ण विनाश बाबुल का भाग्य होना था (यशायाह 47:11)। यह सब धीरे-धीरे पूरा होना था। कुस्त्रू द्वारा नगर को पराजित करने के बाद, फारसी राजा दारियस और फिर सिकन्दर महान ने इस पर दोबारा कब्जा कर लेना था। दूसरी शताब्दी तक, दीवारों को छोड़कर और कुछ भी नहीं बचा था। सारसीन के समय तक रेगिस्तानी तूफानों ने किसी ज़माने की बड़ी-बड़ी प्राचीन दीवारें छिपा दी थीं और विनाश का काम पूरा हो गया था। नबियों ने पानी के खड़ा होने (यशायाह 14:23) और उजाड़ तथा रेगिस्तान की बात की थी (यिर्मयाह 51:43)। दोनों भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं; बाबुल के सूखे रेगिस्तान में मौसमी तालाब और खड़ा पानी ही मिलता है।

भविष्यवाणी की गई थी कि शक्तिशाली बाबुल राजाओं की शान अर्थात कसदियों की सुन्दरता का घमण्ड बनकर उभरेगा (यशायाह 13:19)। फिर यह इतना उजाड़ हो जाएगा कि भयभीत चरवाहे इसकी धरती में रात नहीं बिताएंगे (यशायाह 13:20)। जंगली जानवर और चिंघाड़ने वाले जीव इस में बसेरा करेंगे (यशायाह 13:21, 22)। इसके मनोहर राजभवनों में कीड़े-मकौड़े और मन्दिरों में गीदड़ बोला करेंगे (यशायाह 13:22)। आधा मील घेरे वाला और छह सौ फुट ऊंचा बेलुस का इसका अतिविशाल मन्दिर खण्डहर हो जाएगा (देखिए यिर्मयाह 51:37)। नबी की भविष्यवाणी के अनुसार उस क्षेत्र में जाने वाले यात्री अचम्भित होते हैं (यिर्मयाह 51:43)।

शायद भारत को जाने के लिए केप ऑफ गुड होप की नई खोज से एक नया मार्ग देने के कारण बाबुल का कुछ भाग आज भी उजाड़ है। यह उजाड़, किसी भी कारण से हो, यह भविष्यवक्ताओं की बात का पूरा होना है कि यह सदा के लिए उजाड़ हो जाएगा। लिखित

बाइबल में परमेश्वर की हस्तलिपि मिलती है, और बाबुल के उजाड़ स्थान पर भी इसे उतनी ही स्पष्टता से देखा जा सकता है।

नीनवे

''तीन दिन की यात्रा'' वाला नीनवे साठ मील के घेरे में एक बहुत ही बड़ा नगर था (योना 3:3)। इसकी सौ-फुट-ऊंची दीवारों पर दो-दो सौ फुट ऊंचे पन्द्रह सौ बुर्ज थे। इतनी सामर्थ के बावजूद, नगर के पाप के कारण परमेश्वर की ओर से इसके विनाश की भविष्यवाणी हो गई थी। उसकी भविष्यवाणी यह थी कि इसका विनाश उमड़ते हुए सैलाब (धारा) (नहूम 1:1, 8; 2:6) और आग से होगा (नहूम 3:13)। 612 ई.पू. में दोनों बातें पूरी हो गईं। टिग्रिस नदी का पानी नगर के कुछ क्षेत्रों में भर आया जिससे इसकी दीवार का कुछ भाग बह गया और शत्रु नगर में प्रवेश कर गए। राजा ने अपना महल, घर तथा अपने आपको जलाकर श्मशान भूमि बनाई। परमेश्वर ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि लूट के रूप में सोना लिया जाएगा (नहूम 2:9), जिसकी सत्यता इतिहास ने प्रमाणित कर दी है। आज नीनवे एक उजाड़ स्थान बन चुका है और इसके प्रसिद्ध नाम को विनाश का खतरा है।

दमिश्क

आमोस ने भविष्यवाणी की थी कि दमिश्क को दण्ड आग से दिया जाएगा (आमोस 1:3-14)। यशायाह ने दावा किया था कि यह एक खण्डहर का ढेर बन जाएगा (यशायाह 17:1)। आज दमिश्क का अस्तित्व तो है, परन्तु ये भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं। यह कई बार खण्डहरों का ढेर बन चुका है। आठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व, अश्शूरियों के राजा ने दमिश्क पर कब्जा कर लिया और इसके निवासियों को निर्वासित कर दे दिया था। दमिश्क पर सिकन्दर महान और पुन: सारसीनियों ने विजय पाई थी।

राष्ट्रों व लोगों से सम्बन्धित भविष्यवाणियां

इब्रानी लोगों से सम्बन्धित

इब्रानी लोगों के बारे में अधिक भविष्यवाणियां दी गई हैं। वे मिस्र में गुलाम होंगे (उत्पत्ति 15:13, 14)। वे ठहराए हुए समय पर छूटेंगे (उत्पत्ति 46:4)। उन्हें कनान देश दिया जाएगा (उत्पत्ति 15:18)। उनकी जाति महान होगी (उत्पत्ति 46:3)। वे दो राज्य बन जाएंगे (1 राजा 11:31)। दक्षिणी राज्य अश्शूर से बच जाएगा परन्तु बाबुल के हाथ पड़ जाएगा (1 राजा 14:15, 16); परन्तु, इसका पूरी तरह से विनाश नहीं होगा। अन्यजातियां जिनमें विजेता बाबुल भी था, समाप्त हो जाएंगे, परन्तु यहूदा नहीं (यशायाह 13:20)। यहूदा सत्तर वर्षों तक बाबुल की सेवा करेगा और फिर बहाल हो जाएगा (यिर्मयाह 25:11,22)। परमेश्वर के सुधार के कारण यहूदा से मूर्तिपूजा सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। बाद में वह (यहूदा) अपने कोने के सिरे के पत्थर को नकार कर परास्त हो जाएगी (भजन 118:22)।

इब्रानी लोगों के सम्बन्ध में इन भविष्यवाणियों का पूरा होना एक मजबूत गवाही है कि यह वचन परमेश्वर के आत्मा से है। बिना किसी चाटुकारी के ख़तरे और कष्ट की भविष्यवाणियां इब्रानी लोगों द्वारा इब्रानी लोगों के लिए की गई थीं। एक-एक करके, वे भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं। फ्रैड्रिक महान ने अपने कोर्ट चैपलेन से एक बार बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के प्रमाण देने के लिए कहा था। उसने तीव्रता से उत्तर दिया, ''यहूदी लोग, महाराज।''

अरबी लोगों से सम्बन्धित

इश्माएल के वंशजों को परमेश्वर ने लड़ाके नहीं बनाया, परन्तु वह जानता था कि वे लड़ाके ही होंगे और यही भविष्यवाणी की गई थी (उत्पत्ति 16:12)। दूसरी जातियों के विनाश की भविष्यवाणियों की तुलना में, अरबियों के समाप्त होने की कोई धमकी नहीं मिलती। दूसरी जातियों का विनाश होगा, परन्तु परमेश्वर की घोषणाओं के अनुसार अरबी लोग अभी भी शक्तिशाली लोग हैं।

मोआबी लोगों से सम्बन्धित

किसी ज़माने में मोआबियों की जनसंख्या काफी थी और वे शक्तिशाली लोग थे। उनका देश उपजाऊ था और उनके नगर बड़े-बड़े थे। उनके पापों के कारण परमेश्वर ने भविष्यवाणी की कि उनकी धरती में बिच्छु पेड़ों के स्थान और नमक की खानियां हो जाएंगी (सपन्याह 2:9) अर्थात प्रत्येक नगर का विनाश हो जाएगा और लोगों के रूप में मोआब का नाश हो जाएगा (यिर्मयाह 48:42)। भविष्यवाणी के शब्दश: पूरा होने के कारण, आज यात्रियों को प्राचीन नगरों के केवल खण्डहर ही मिलते हैं। कुछ गुफ़ाओं तथा चट्टानों में लोग रहते तो हैं, परन्तु एक जाति के रूप में अब मोआब का अस्तित्व नहीं है।

अम्मोनी लोगों से सम्बन्धित

मोआबियों की तरह अम्मोनी लोग भी उपजाऊ देश में रहते थे और उनके देश में आबादी घनी थी। उनके पापों के कारण, भविष्यवाणी के परमेश्वर के वचन से अम्मोनियों के पूर्ण विनाश की पूर्वसूचना दे दी गई थी। रब्बा उजड़कर खण्डहर हो जाएगा (यिर्मयाह 49:2)। यह इसी स्थिति में मिला है। भविष्यवक्ता ने दावा किया था कि अम्मोन का देहात ''सदैव उजड़ा'' रहेगा (सपन्याह 2:9)। आज, इसके चारों ओर खण्डहर हैं। जाति के रूप में अम्मोन ने लोगों से कट जाना था और फिर उसका स्मरण नहीं किया जाना था (यहेजकेल 25:7, 10)। आज कोई भी अपने आपको अम्मोनी नहीं कहता, न ही कोई देश उन लोगों का वंशज होने का दावा करता है।

अदोमी लोगों से सम्बन्धित

सत्रह सौ वर्षों तक अदोमी लोग एक बड़ी और शक्तिशाली जाति थे। अदोम में बहुत से नगर थे। इसकी राजधानी पेट्रा (सेला) एक व्यापारिक केन्द्र थी, जो मिसर, फलस्तीन और सीरिया से आने वाले कारवों को आकर्षित करती थी। इसके अलावा, अदोमियों को खगोलविज्ञान और नौसंचालन की खोज के आरम्भ का श्रेय भी दिया जाता है।

किसी समय की इस महान जाति के पापों के कारण इस पर परमेश्वर का न्याय और शाप पड़ा। नबियों के अनुसार इस धनी और समृद्ध देश ने पीढ़ी से पीढ़ी तक उजाड़ हो जाना था (यशायाह 34:5-10)। लोगों के निवास न करने से, इसमें कांटों, झाड़ियों, सियारों, लीलीत नामक जन्तुओं और सांपों ने वास करना था (यशायाह 34:13-15; यिर्मयाह 49 भी देखिए)। अदोम का विनाश हो जाना था।

इन भयानक भविष्यवाणियों का दुखद ढंग से पूरा होना बाइबल का सम्मान करने की आज्ञा देता है। उन्नीस सौ वर्षों से, जाति के रूप में अदोम का कोई अस्तित्व नहीं है। कोई इन्सान अपने आपको अदोमी होने का दावा नहीं करता। इतने धनी और समृद्ध नगर पेट्रा के उजाड़ और वीरान होने की मनुष्य केवल कल्पना ही कर सकता है। सदियों तक इसके स्थान का पता नहीं था; परन्तु अन्ततः इसके खण्डहर तीस अन्य अदोमी नगरों के साथ ढूंढ़ लिए गए हैं। मवेशियों को चरानेवाले कुछ अरबी लोगों को छोड़कर ये नगर उजाड़ पड़े हैं, और वे भी बिच्छुओं के कारण उन खण्डहरों में जाने से कतराते हैं।

फलस्तीनी लोगों से सम्बन्धित

फलस्तीया उपजाऊ देश में रहने वाली एक बड़ी जाति थी। अश्कलोन, अश्दोद, एक्रोन और अज्जा इसके प्रमुख नगर थे। अश्कलोन नगर बढ़िया किस्म की शराब के लिए प्रसिद्ध था। अश्दोद ने ''इतिहास में सबसे लम्बी घेराबन्दी'' का सामना किया था। अज्जा के धन से तीन मंजिले घर बने थे जिनमें दीवारों पर पलस्तर और बड़े-बड़े बाथरूम थे। इसके गढ़ इतने मजबूत थे कि दो महीने तक सिकन्दर महान का सामना कर सकते थे।

परन्तु पाप अपमान का हेतु है और यह परमेश्वर की ओर से विनाश का संदेश लाता है। घृणा, विद्रोह व अन्य पापों के कारण फलस्तीया पर परमेश्वर की ओर से विनाश की भविष्यवाणी हुई। उसके बड़े-बड़े नगर गिराकर राख का ढेर बनाए जाने थे। नबियों ने एक्रोन, अश्कलोन, अश्दोद और अज्जाह का नाम विशेष रूप से लिया था (सपन्याह 2:4)। यात्रियों को फलस्तीया एक निर्जन देश के रूप में मिला है, जहां पर खानाबदोश अरबी अपने मवेशियों को चराते हैं। अश्दोद के खण्डहर बिच्छुओं के लिए प्रसिद्ध हैं। कौन सा ढेर प्राचीन एक्रोन था इसके बारे में सही-सही बताने पर विवाद है। सिकन्दर महान ने अज्जाह को पूरी तरह से नष्ट करके समुद्र से लगभग दो मील दूर इस स्थान को छोड़ दिया था। लगभग एक मील दूर इसे फिर से बनाया गया। कुछ लेखक पहचान नहीं कर पाए कि यह नगर नये स्थान पर था, परन्तु सही-सही लिखने वाले लोग इन्हें ''पुराना अज्जाह'' और ''नया अज्जाह'' का नाम देते हैं। कई लोगों ने तो पुराने नगर को ''निर्जन अज्जाह'' का नाम

दिया है।

मिसरियों से सम्बन्धित

समृद्ध मिसर में किसी समय बीस हज़ार नगर थे; परन्तु परमेश्वर के भविष्यवाणी के वचन को पूरा करते हुए मिसर सुनसान उजाड़ बन गया (यहेजकेल 29:12)। आज भी, मिसर का अधिकतर भाग उजाड़ ही है। परमेश्वर के नबी ने कभी घमण्डी रहे उस देश में स्थानीय शासकों के समाप्त होने की भविष्यवाणी की थी (यहेजकेल 29:15)। दो हज़ार से अधिक वर्ष पूर्व हुई यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है।

बाबुल, नीनवे, अम्मोन और अदोम की भविष्यवाणियों के विपरीत मिसर के सर्वनाश की घोषणा नहीं की गई थी। नबी ने मिसर के विलोपन की नहीं बल्कि उसे घटाने की पूर्वसूचना दी थी इसने राज्यों में सबसे छोटा हो जाना था (यहेजकेल 29:15) और दो हज़ार से अधिक वर्ष से यह ऐसा ही है। इसकी महानता को फिर से बहाल करने के शक्तिशाली नेपोलियन सहित बहुत से लोगों के सारे प्रयास विफल हो चुके हैं।

मसीही लोगों से सम्बन्धित

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने एक भावी राज्य की महान बातों की पूर्व सूचना दे दी थी। इसका एकमात्र सम्राट दूसरा दाऊद होना था। उसका राज्य दया के साथ स्थापित होना था (यशायाह 16:5)। उसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहलाना था (यशायाह 9:6)। उसकी प्रजा ने उसकी इच्छा को पूरा करना था (यशायाह 2:3)। उसका राज्य आत्मिक राज्य होना था (देखिए यशायाह 2:4)। उसकी सत्ता रोमी साम्राज्य के दिनों से लेकर अनन्तकाल तक, अन्तरराष्ट्रीय और अविनाशी होनी थी (दानिय्येल 2:44)।

इन भविष्यवाणियों का पूरा होना अद्‌भुत बात थी! रोमी साम्राज्य के दिनों में, एक राज्य जो इस जगत का नहीं, एक शासन जो स्वर्ग से प्रकट होता है अर्थात धर्म, आनन्द और शान्ति का राज्य इस पृथ्वी पर आरम्भ हुआ था जिसका राजा दाऊद का ईश्वरीय पुत्र है। इस स्वर्गीय राज्य के लोगों को मसीही कहा जाता था। ऐसे राज्य की भविष्यवाणी दृढ़ता से की गई थी और इसकी प्रत्येक बात का वैसे ही पूरा होना अविश्वसनीय सा लगता है।

व्यक्तियों के नाम लेकर भविष्यवाणियां

भविष्यवाणी की अचूक बात न केवल उल्लिखित नामों वाले नगरों और लोगों के भविष्यों को ही बल्कि विशेष व्यक्तियों के भविष्य को भी देख सकती थी।

योशिय्याह

घटना से कोई तीन सौ वर्ष पूर्व ''परमेश्वर के जन'' ने ''यहोवा से वचन पाकर'' (1 राजा 13:1) दाऊद के वंशजों में से एक के नाम और जो कुछ उसने करना था, उसकी घोषणा की। उसकी भविष्यवाणी में दाऊद के कुल में एक पुत्र के जन्म की बात थी; इसमें

विशेष रूप से उल्लेख था कि उसका नाम योशिय्याह रखा जाएगा और इसमें मूर्तिपूजा की रुकावट के बीच परमेश्वर के लिए उसकी धुन की भी पूर्वसूचना दी गई थी (1 राजा 13:2)। इन बातों को, कोई मनुष्य नहीं जान सकता था।

रेकाब

मसीह से छह सौ वर्ष पूर्व, कुछ पुत्रों द्वारा अपने पिता की आज्ञा मानने के कारण परमेश्वर के नबी ने उस परिवार को सदा के लिए आशीष दी (यिर्मयाह 35:18, 19)। उन्नीसवीं शताब्दी में मक्का के निकट लगभग साठ हज़ार लोग पाए गए जो अपने आपको रेकाब के वंशज होने का दावा करते, विशुद्ध यहूदी धर्म को मानते और इब्रानी भाषा जानते थे।

सिदकिय्याह

परमेश्वर का अनादर करने के कारण दुष्ट सिदकिय्याह को दुर्भाग्यपूर्ण बदला मिलना था। भविष्यवक्ता ने घोषणा की कि सिदकिय्याह को बाबुल के नगर में कैदी बनाकर ले जाया जाएगा और वहां वह मर जाएगा, परन्तु बाबुल को कभी नहीं देखेगा (यहेजकेल 12:13)। इस अजीब भविष्यवाणी के लिए उस बात का पूर्वज्ञान आवश्यक था कि मूर्तिपूजक राजा नबूकदनेस्सर क्या करेगा। हम निश्चित हो सकते हैं कि यह मूर्तिपूजक राजा अभागे कैदी सिदकिय्याह को बाबुल ले जाने से पहले उसकी आंखें निकालकर एक इब्रानी भविष्यवाणी को पूरा करने का षड्यन्त्र नहीं रच रहा था।

ऐन्टियोकुस

ऐन्टियोकुस चतुर्थ (ऐपिफेन्स) अर्थात "मैडमैन"[2] के सम्बन्ध में दानिय्येल की भविष्यवाणी इतनी सटीक व संक्षिप्त है कि अविश्वासी लोग यही दावा करते हैं कि यह बात ऐन्टियोकुस के शासन से चार सौ वर्ष पूर्व नहीं लिखी जा सकती (देखिए दानिय्येल 8 और 11)। यह इतनी स्पष्ट है कि आलोचक दावा करने लगते हैं कि इसके वर्णन को भविष्यवाणी नहीं बल्कि इतिहास माना जाए।

कोई भी दस्तावेज़ी प्रमाण दानिय्येल की पुस्तक के लिखने पर संदेह नहीं करता। दानिय्येल के नाम से किसी छद्म पुस्तक के लिखे जाने और इस प्रकार की पुस्तक को परमेश्वर की बाइबल में समाविष्ट करने का विचार परमेश्वर और उसके वचन के स्वभाव के विरुद्ध है। साधारण सत्य यह है कि दानिय्येल की भविष्यवाणी इतनी सटीक और विषय के अनुसार है कि ईश्वरीय दस्तावेज़ के रूप में इसके प्रमाण को नष्ट करने का एकमात्र ढंग इसे छद्म साहित्य के रूप में बदनाम करना है।

यीशु

सामान्य प्रतीक्षा। आने वाले मसीहा के बारे में इब्रानी नबियों के लेखों ने एक सामान्य प्रतीक्षा और आशा बन्धा दी थी। "कि क्या आनेवाला तू ही है ... ?" (मत्ती 11:3) यह एक

ऐसा प्रश्न है जो आम तौर पर जताए जाने वाले विश्वास को प्रकट करता है। यहूदियों के साथ अन्यजातियों के लोग भी उस आने वाले की प्रतीक्षा में थे जिसने संसार को आशीष देनी थी।

समय बताया गया। आत्मा की प्रेरणा प्राप्त भविष्यवक्ताओं ने न केवल मसीहा के आने की पूर्वसूचना ही दी, बल्कि उन्होंने उसके आने के समय की भी घोषणा की थी। उसका आना रोमी साम्राज्य के अस्तित्व में होने के समय ही होना था (जोकि 65 ई.पू.–476 ई. तक था)। सभी जातियों की इच्छा दूसरे मन्दिर के स्थिर रहने अर्थात 70 ईस्वी तक होनी थी। उस हाकिम ने वंश के विनाश अर्थात 70 ईस्वी से पहले यहूदा में से निकलना था। उस अभिषिक्त अर्थात राजकुमार ने यरूशलेम के विनाश से पहले अर्थात 70 ईस्वी से पहले आना था। इसलिए संसार अपने उद्धारकर्त्ता के आने की आशा रोमी साम्राज्य की स्थापना अर्थात 65 ई.पू. और यरूशलेम के विनाश अर्थात 70 ईस्वी के बीच कर सकता था।

कुछ चित्रण तथा नाम। यीशु के कुछ चित्रणों तथा नामों की भविष्यवाणी इस प्रकार से है: शीलो (उत्पत्ति 49:10), याकूब का तारा (गिनती 24:17), नबी (व्यवस्थाविवरण 18:15), जो आता है (भजन 118:26), दाऊद का प्रभु (भजन 110:1), परमेश्वर का पुत्र (भजन 2:7, 12), सिय्योन का राजा (भजन 2:6), मसीह अर्थात अभिषिक्त (भजन 2:2), आराधना के योग्य (देखिए भजन 2:12), इम्मानुएल (यशायाह 7:14), ठोकर का पत्थर (यशायाह 8:14), अद्भुत युक्ति करने वाला (यशायाह 9:6), शांति का राजकुमार (यशायाह 9:6), पराक्रमी परमेश्वर (यशायाह 9:6), अनन्तकाल का पिता (यशायाह 9:6), लोगों के लिए विश्रामस्थान (यशायाह 11:10), कोने का अनमोल पत्थर (यशायाह 28:16), परमेश्वर का दास (यशायाह 42:1), परमेश्वर का चुना हुआ (यशायाह 42:1), परमेश्वर का धर्मी जन (यशायाह 42:6), अन्यजातियों के लिए ज्योति (यशायाह 49:6), उद्धारकर्त्ता (यशायाह 49:6), यहोवा का भुजबल (यशायाह 53:1), भेड़ (यशायाह 53:7), साक्षी (यशायाह 55:4), नायक (यशायाह 55:4), अगुआ (यशायाह 55:4), सुसमाचार सुनाने वाला (यशायाह 61:1), उद्धारकर्त्ता अर्थात छुड़ाने वाला (यशायाह 62:11), यहोवा (यिर्मयाह 23:6), दाऊद (होशे 3:5), प्रभुता करने वाला राजकुमार (यिर्मयाह 30:21), अंकुर (यिर्मयाह 23:5), चरवाहा (यहेजकेल 34:23), मनुष्य की संतान (दानिय्येल 7:13), सदा तक प्रभुता करने वाला (मीका 5:2), सभी जातियों की इच्छा (हाग्गै 2:7), मन्दिर का प्रभु (मलाकी 3:1), वाचा का दूत (मलाकी 3:1), धर्म का सूर्य (मलाकी 4:2)। पृष्ठ 37 से आरम्भ होने वाले पाठ ''मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणियां'' और पृष्ठ 99 पर पाठ ''मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणियां व उनका पूरा होना'' भी देखिए।

सम्भावना का नियम। यदि यीशु के बारे में केवल पचास भविष्यवाणियां ही की गई होतीं, तो यह मानकर कि उनके पूरा होने या न होने की बराबर सम्भावनाएं हैं, उन सभी भविष्यवाणियों के पूरा होने की सम्भावना बहुत कम होती। यह मानना कि पच्चास घटनाएं एक ही समय में हो जाएंगी ''इसके होने की प्रबल असम्भावना को सही ढंग से व्यर्थ करने की अंकों की शक्ति से ऊपर हो जाती है।''[3] ये गणनाएं परमेश्वर के पक्ष तथा विरोध में

''लोगों की भावनाओं, राजकुमारों की भावनाओं, बुद्धिमानों के अध्ययन, दुष्टों की चालाकियां, युद्धों, क्रांतियों और राष्ट्रों के अलग-अलग भाग्यों''[14] की इच्छा और कार्यों पर विचार नहीं करतीं।

यदि केवल पांच सौ भविष्यवाणियां ही की गई होतीं, तो उनके एक ही व्यक्ति पर पूरा होने की सम्भावनाएं संसार के पूरी तरह से पानी होने, पानी की उस एक बूंद से भी कम होतीं।

विचार कीजिए: मसीह के बारे में 50 या 100 नहीं बल्कि 332 भविष्यवाणियों की गिनती की गई है! इसलिए इसमें हैरानी की बात नहीं कि यीशु ने दावा किया, ''यदि कोई उसकी [परमेश्वर की] इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं'' (यूहन्ना 7:17)। जैसे प्राकृतिक संसार के प्रमाण नास्तिकों के लिए कोई बहाना नहीं रहने देते, वैसे ही भविष्यवाणी की बातों के प्रमाणों से नास्तिकों के लिए कोई बहाना नहीं रह जाता।

यह बात सामान्यतया स्वीकार की जाती है कि यीशु ने भविष्यवाणियों को पूरा किया। इस दावे का इन्कार करने का केवल एक ही ढंग यह दावा करना है कि ये भविष्यवाणियां यीशु के आने के बाद लिखी गई थीं। परन्तु, यह दावा तो स्वयं नास्तिकों द्वारा झूठा ठहराया जा चुका है। यहूदी नास्तिक भी पुराने नियम की पुस्तकों की प्रामाणिकता और यथार्थता का बड़े ज़ोरदार ढंग से समर्थन करते हैं। इसलिए यहूदियों में से मसीह पर विश्वास न लाने वाले लोग न चाहते हुए भी मसीह के कार्य में योगदान दे देते हैं!

यीशु द्वारा दी गई भविष्यवाणियां

मसीह के आने के बारे में 332 भविष्यवाणियों में से एक यह थी कि उसने स्वयं एक भविष्यवक्ता होना था। सच तो यह है, कि उसने भविष्यवाणी करने की अपनी योग्यता पर परमेश्वर होने के अपने दावे को दांव पर लगा दिया। इस बढ़ई/प्रचारक ने स्वयं अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी (मत्ती 16:21; मरकुस 9:31; लूका 9:22), फिर भी उसने अपनी लहर के भावी विस्तार के बारे में पहले से ही बता दिया था। वह कोई साधारण नबी नहीं था! उसकी मृत्यु के बाद उसके अनुयायियों की गिनती का बढ़ना इतिहास का एक आश्चर्य है।

यीशु की बहुत सी भविष्यवाणियों में से पच्चीस भविष्यवाणियां यरूशलेम नगर के विषय में थीं। जब अभी सब कुछ ठीक ठाक था, तो उसने इसके सम्पूर्ण विनाश की बड़ी स्पष्टता से घोषणा की थी (मत्ती 16:21; मरकुस 9:31; लूका 9:22)। संगमरमर के 50×24×16 फुट आकार के मन्दिर के बड़े-बड़े विशाल पत्थरों पर पत्थर नहीं छोड़ा जाना था (मत्ती 24:2; मरकुस 13:2; लूका 21:6)। यह भविष्यवाणी चालीस वर्ष बाद तीतुस के सामने नगर के गिरने के समय पूरी हुई। आग से मन्दिर का सोना पिघल गया था और लूटमार करने वालों ने ''पिघले हुए खजाने को ढूंढ़ने के लिए नीचे तक'' खोदने के लिए पत्थरों को उखाड़ डाला। सेनापति तीतुस ने भव्य इमारत को बचाने की कोशिश की परन्तु वह अपने सैनिकों के क्रोध पर नियन्त्रण न पा सका। मन्दिर की सुन्दर और बहुमूल्य इमारत को बचाने के प्रयास में, तीतुस अनजाने में यीशु के वचन के विरुद्ध काम करने वाला बन गया। फिर भी, यीशु तो जानता था कि क्या होने वाला है। मत्ती 24:25 में उसने कहा था, ''देखो, मैंने पहले

से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।'' तीतुस को बाद में अहसास हुआ कि रोमी उत्साह की सफलता हथियारों के कारण नहीं बल्कि परमेश्वर की इच्छा के कारण थी।

यीशु ने कहा था, कि झूठे मसीह उठ खड़े होंगे। इतिहास में ऐसे लोगों के नाम दर्ज हैं जिन्होंने आत्मा की प्रेरणा पाए हुए भविष्यवक्ता होने के बड़े-बड़े दावे किए थे। यीशु के वचन के अनुसार, लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा होनी थी, जगह जगह अकाल पड़ने थे और भूंईडोल होने थे (मत्ती 24:6, 7; मरकुस 13:7, 8)। इतिहास में क्लौदियुस कैसर के शासन के दौरान न केवल लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा बल्कि अकाल और मरी और भूकंपों के बारे में भी बताया गया है। यीशु ने कहा था कि आकाश से चिह्न प्रकट होंगे (लूका 21:11)। आदरणीय इतिहासकारों ने चाहे वह अविश्वासी ही थे, ऐसे असामान्य दृष्यों की बातें लिखी हैं जिन से मनुष्य के मन बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। यीशु ने पहले से चेतावनी दी थी कि उसके चेले यरूशलेम के विनाश से पहले बुरी तरह से सताए जाएंगे (मत्ती 24:9)। इस प्रकार यीशु पहले से जानता था कि नीरो और अन्य शासक मसीही लोगों के साथ क्या करेंगे। यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि सताव के कारण बहुत से मसीही विश्वास से फिर जाएंगे (मत्ती 24:10)। इतिहास हमें इन धर्मत्यागों के विषय में बताता है। यरूशलेम के ढहने से पहले, सारे संसार में सुसमाचार सुनाया जाना था। 30 से 70 ईस्वी से मसीहियत का फैलना इतिहास का सबसे अधिक आश्चर्य में डालने वाला अध्याय है। यरूशलेम नगर को सेनाओं द्वारा घेरे जाने के चालीस वर्ष पहले यीशु जानता था कि उसके चेलों को बच जाने का अवसर मिलेगा। दूसरी ओर, इतिहासकार अभी भी जान नहीं पाए हैं कि घेराबन्दी शुरू करने के बाद रोमी सेनापति सेलशियस गैलस पीछे क्यों हट गया था। दोबारा घेराबन्दी करने से पहले ही, यीशु की नसीहत के अनुसार हज़ारों मसीही लोगों ने यरूशलेम से भागकर अपनी जान बचाई थी। विश्वास न करने वाले यहूदी वहीं रहे और उनका नाश हुआ या गुलाम बनाकर बेच दिया गया।

यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि यरूशलेम नगर जिससे वह बहुत प्रेम करता था और जिसके लिए उसने आंसु बहाए थे, संसार के सबसे बड़े सताव में से गुजरने वाला है। यह सब कैसे हुआ इसका सम्बन्ध अन्ततः एक अविश्वासी इतिहासकार फलेव्युस जोसेफस ने जोड़ा था। उन कठिनाइयों के अलावा जिनसे आदमखोरी होने लगी थी, इस मारकाट के कारण 11,00,000 लोगों की हत्या हुई और 97,000 बन्दी बनाए गए थे। बहुत वर्षों के बाद जब इमारतों की नींवों की खुदाई हुई तो एक चश्मदीद गवाह ने बताया कि कोई कह नहीं सकता था कि वहां पहले कोई रहता था। मन्दिर में सबसे अन्तिम बलिदान जुलाई 16 को हुआ था और नगर को आग अगस्त 9, 70 ईस्वी में लगी थी।

यीशु ने न केवल यरूशलेम के होने वाले अन्त के बारे में चौंकाने वाले तथ्यों की भविष्यवाणी ही की थी बल्कि उसने स्पष्ट तौर पर बताया था कि यह सब उस समय जीवित पीढ़ी के समय ही हो जाना था। समय पर, चालीस वर्षों बाद, एक मूर्तिपूजक सेना ने उसकी बात को पूरा किया था।

यीशु के पूर्वज्ञान, यहां तक कि उसके विस्तृत वर्णन को कम करने का एकमात्र ढंग,

यह कहना है कि ये भविष्यवाणियां उसके चेलों ने यरूशलेम के विनाश के बाद लिखी थीं। परन्तु बहुत से प्रमाण संकेत देते हैं कि यीशु की भविष्यवाणियां बताते सुसमाचार के तीन वृत्तांत यरूशलेम के विनाश से पहले प्रकाशित हुए थे। न केवल उनका वितरण किया गया था बल्कि स्पष्टत: मसीही लोग नगर से भागने की सुसमाचार में पाई जाने वाली उस नसीहत को मानकर भाग भी गए थे। सुसमाचार के जिस वृत्तांत में इन भविष्यवाणियों को नहीं लिखा गया वह केवल यूहन्ना रचित सुसमाचार है जो 70 ईस्वी के बाद प्रकाशित हुआ था।

यीशु की भविष्यवाणियां इतनी महत्वपूर्ण थीं और उनका पूरा होना इतना सटीक था कि इतिहास यीशु की भविष्यवाणियों को नकारने के लिए जान बूझकर किए आश्चर्यजनक प्रयास के बारे में बताता है। यीशु ने कहा था कि यरूशलेम के विनाश के बाद, अन्यजातियों द्वारा इसे पांवों तले रौंदा जाएगा। धर्मत्याग करने वाले सम्राट जूलियन (331-62 ई.) ने मसीहियत के प्रति अपनी घृणा के कारण, अन्यजातियों को यरूशलेम से निकालने और यहूदियों को फिर से बसाने का फैसला किया। मन्दिर दोबारा बनाने के उसके प्रत्येक प्रयास में प्राकृतिक और अप्राकृतिक सब प्रकार की रुकावटें आईं। अन्त में, बहुत सा धन खर्च लेने के बाद, जूलियन ने यह कार्य छोड़ दिया। अपनी मृत्यु के समय उसने स्पष्ट तौर पर कहा, ''गलीली, तू जीत गया।''

सारांश

पुराने और नये नियमों की भविष्यवाणियों के पूरा होने का यह दिलचस्प अध्ययन केवल एक ईश्वरीय लेखक की ओर संकेत कर सकता है। भविष्यवाणियां इतनी स्पष्ट हैं कि इन्हें कोई संयोग माना ही नहीं जा सकता अर्थात वे इतनी स्पष्टता से पूरी हुईं कि उन्हें अनुमान नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर करे कि हम उनसे यह समझ पाएं कि परमेश्वर के वचन को लिखने की प्रेरणा दी गई थी।

पाद टिप्पणियां

[1]कसदिया उचित रूप से केवल बाबुल का अति दक्षिणी भाग है। इस क्षेत्र में कब्जे के बाद, कसदियों ने नियो-बेबिलोनियन साम्राज्य की स्थापना की। इब्रानी भविष्यवक्ताओं ने ''कसदियों के देश'' को बाबुल के साम्राज्य के सभी लोगों और बाबुल को ''कसदी'' कहकर पुकारा था। [2]ऐंटियोकुस चतुर्थ (ऐपिफेन्स) सीरिया का एक सिलोकसी (राजघराने) का राजा था जिसने पुराने और नये नियमों के चार सौ वर्षों के अन्तराल के दौरान 175 से 164 ई. पू. तक शासन किया। उसने यहूदियों में रहने वालों सहित अपनी प्रजा पर यूनानी संस्कृति थोपी थी। यहूदी धर्म के विनाश के उसके प्रयासों के कारण खतने, सब्त को मानने और व्यवस्था के पढ़ने पर रोक लग गई। मन्दिर अपवित्र हो चुका था; यहूदी लोग मूर्तिपजूकों की आराधना में भाग लेने और अशुद्ध भोजन खाने के लिए मजबूर थे। यहूदा मकबियुस ने विद्रोह किया जो यहूदी लिब्रतिनियों की बहाली का कारण बन गया। 141 ई. पू. में राष्ट्र सीरिया के नियन्त्रण से स्वतन्त्र हो गया। मकाबी विद्रोह और इसके लिए होने वाली घटनाएं 1 और 2 मकाबी की पुस्तक में दर्ज हैं। [3]अलैग्ज़ेंडर कैम्पबेल, द *एविडेन्सस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी: ए डिबेट* (सिन्सिनट्टी: चेज़ एण्ड हॉल, 1878), 334-35. [4]अलग्ज़ेंडर केथ, *एविडेन्स ऑफ़ ट्रुथ ऑफ़ द क्रिश्चियन रिलिजन डिराइव्ड फ्रॉम द लिटरल फुलफिलमेंट ऑफ प्रोफेसी* (फिलाडेल्फिया: प्रेस्बिटेरियन बोर्ड ऑफ़ पब्लिकेशन, पृ. न.), 368-69।